90

# ''क्रूस पर मरने वाले डाकू का ज्या हुआ?''

## ( मत्ती 27:38-44; लूका 23:39-43 )

क्रूस पर लटके यीशु ने अपने पास के क्रूसों पर चढ़े दो में से एक डाकू से प्रतिज्ञा की कि वह उसी दिन उसके साथ स्वर्गलोक में होगा। हमारा विश्वास है कि यीशु ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। यानी, मृत्यु के समय उस डाकू को लाज़र की तरह ही स्वर्गदूतों द्वारा अब्राहम की गोद में पहुंचाया गया (लूका 16:22)। यह तथ्य इस बात को साबित नहीं करता कि यहां दिया गया विवरण आज गैर मसीही लोगों के लिए उद्धार का ढंग बताता है।

डाकू पर बहुत कुछ विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए, बहुत से लोगों का दावा है कि वह एक ''बाहरी पापी'' था। ''बाहरी'' शब्द का अर्थ मूलत: यह है कि जो नागरिक न हो; पवित्र शास्त्र में कई बार इसका इस्तेमाल उसके लिए किया जाता है, जो परमेश्वर के राज्य का न हो (देखें इफिसियों 2:19)। इस शिक्षा को मानने वाले लोगों का विश्वास है कि डाकू का उद्धार ''बाहरी पापियों'' अर्थात गैर मसीहियों के लिए एक नमूना है। परन्तु वह डाकू ''बाहरी पापी'' में नहीं, बल्कि ''परमेश्वर के खोए हुए बालक'' की श्रेणी में आता है। इस पर विचार करें: उसे क्रूस पर किसने चढ़ाया? रोमियों ने। क्या रोमी लोग रोमियों को क्रूस पर चढ़ाते थे? नहीं। तो फिर वे किन्हें क्रूस पर चढ़ाते थे? अपने साम्राज्य के बागियों को। उस विशेष इलाके के लोग यहूदी ही थे। हम आसानी से दावा कर सकते हैं कि वह डाकू यहूदी ही था। दूसरे डाकू को उसके शब्दों ''क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता?'' से संकेत मिलता है कि वह एक यहूदी था। अधिकतर अन्यजाति एक ''परमेश्वर'' के बजाय ''देवताओं'' शब्द का इस्तेमाल करते थे। परन्तु वह आज्ञाकारी यहूदी नहीं था; उसने दस आज्ञाओं में से कम से कम एक का उल्लंघन किया था (निर्गमन 20:15)। तौ भी, वह था तो यहूदी ही। यह बात उसे परमेश्वर की संतान बनाती है, क्योंकि क्रूस पर यीशु की मृत्यु तक, यहूदी लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे (देखें व्यवस्थाविवरण 7:6)। यदि उस डाकू का उद्धार आज किसी बात का उदाहरण है, तो वह इस बात का है कि एक भटका हुआ मसीही गैर मसीही नहीं, क्षमा कैसे पा सकता है।

इसके अलावा यह दावा किया जाता है कि डाकू का बपतिस्मा नहीं हुआ था। उसकी

मृत्यु के समय यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई को आरम्भ हुए कई साल हो चुके थे। मत्ती ने यूहन्ना की आरम्भिक प्रसिद्धि के बारे में लिखा है: ''तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के और यरदन के आस-पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया'' (मत्ती 3:5, 6)। उस क्षेत्र के *बहुत से* लोगों ने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया था। बाद में उसी क्षेत्र में जब यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ की, तो उसने और उसके चेलों ने यूहन्ना से भी अधिक लोगों को बपतिस्मा दिया (यूहन्ना 4:1; देखें 3:26)। क्या यह सम्भव नहीं है कि उस डाकू ने इसी समय में, यूहन्ना से या यीशु के चेलों से बपतिस्मा लिया हो ?[2] ऐसा हुआ या नहीं, इस बात का महत्व नहीं है, परन्तु दिया जाने वाला तर्क मान्यताओं पर नहीं, परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिए।

मैं क्यों कहता हूं कि उस डाकू के बपतिस्मा लेने या न लेने का हमारे लिए कोई महत्व नहीं है ? जैसे पहले भी कहा गया है, उसका उद्धार गैर मसीही लोगों के लिए आज नमूना नहीं होना था। इस दावे को साबित करने के लिए मैं तीन कारण बताता हूं।

## उसका उद्धार पुरानी व्यवस्था के मिटाए जाने से पहले हुआ था

आज गैर मसीहियों के लिए मन परिवर्तन के उदाहरण के रूप में डाकू का उदाहरण देना, 2 तीमुथियुस 2:15 में दिए गए सिद्धांत का उल्लंघन करना है: ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो *सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता* हो।'' सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाने का एक ढंग पुरानी वाचा (पुराने नियम) के काल और नई वाचा के काल से सम्बन्धित बातों में अन्तर करना है।

बाइबल सिखाती है कि यीशु की मृत्यु पुरानी और नई वाचा के बीच का विभाजक बिन्दु है: कुलुस्सियों के नाम पत्री में पौलुस ने लिखा है कि परमेश्वर ''ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उस [मसीह] के साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था, मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया है'' (कुलुस्सियों 2:13, 14)। यदि इस बारे में कोई प्रश्न था कि प्रेरित के मन में कौन से नियम थे, तो उसने आयत 16 में कई वर्गों की सूची देते हुए बताया कि ''खाने-पीने या पर्व या नये चांद या सब्त के विषय में'' नियम थे। ''सब्त'' वाक्यांश साबित करता है कि पौलुस ने अपने वाक्य में मूसा की व्यवस्था को शामिल किया; जो दस आज्ञाओं में से एक थी ''तू विश्राम [अर्थात सब्त के] दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना'' (निर्गमन 20:8)।

''मिटा दिया'' और ''हटा दिया'' वाक्यांश यह संकेत देने के लिए मज़बूत शब्द हैं कि व्यवस्था को खत्म कर दिया गया था। यह कब हुआ ? ''क्रूस पर कीलों से जड़कर'' शब्दों पर ध्यान दें। यह उस लकड़ी के टुकड़े की बात नहीं है, जिस पर मसीह को सूली

पर चढ़ाया गया था, बल्कि यीशु की *मृत्यु* की ओर संकेत है। यीशु और केवल यीशु ने पुरानी वाचा की सभी आज्ञाओं को पूरी तरह से मानते हुए उसे पूरा किया। उसके जीवन के अन्त में, यह पूरा हुआ (सम्पूर्ण हुआ) समझौता बन गई। पुरानी वाचा को यीशु की मृत्यु पर ''सामने से हटा दिया गया।''

इसके साथ ही, नई वाचा लागू हो गई। इब्रानियों 9:15 में लेखक ने कहा कि यीशु ''नई वाचा का मध्यस्थ है।'' फिर उसने समझाया कि नई वाचा के लागू होने से पहले क्या होना आवश्यक था: ''क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है वहां वाचा बान्धने वाले की मृत्यु का समझ लेना भी आवश्यक है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती'' (इब्रानियों 9:16, 17)। यह रूपक एक विशेष वाचा (या समझौते) पर आधारित है, जिसे ''अन्तिम वसीयत और वाचा'' कहा जाता है। ''अन्तिम वसीयत और वाचा'' कब प्रभावी होती है? जब वसीयत करने वाले की मृत्यु हो जाए, इससे पहले नहीं। बहुत सी बाइबलों में मत्ती की पुस्तक से पहले पृष्ठ पर ये शब्द मिलते हैं: ''नया नियम अर्थात प्रभु यीशु का सुसमाचार।'' यीशु का नया नियम कब प्रभावी हुआ? उसकी मृत्यु से। मसीह की मृत्यु पुराने नियम के युग का अन्त और नये नियम के युग का आरम्भ था।

डाकू आज गैर मसीहियों के उद्धार का नमूना नहीं है, क्योंकि उसे पुरानी व्यवस्था के हटाए जाने से पहले क्षमा दी गई। सच है कि उसे यीशु की मृत्यु से कुछ घण्टे पहले स्वर्गलोक की प्रतिज्ञा दी गई थी, परन्तु वह प्रतिज्ञा क्रूस पर ''पुराने नियम की ओर'' दी गई थी।

नये नियम, अन्तिम वसीयत और वाचा में तुलना को और बढ़ाया जा सकता है। वसीयत का मुख्य उद्देश्य वसीयत करने वाले की सम्पत्ति का विभाजन करना होता है। वसीयत करने वाले की मृत्यु के बाद, लोगों को वसीयत के प्रावधानों से लाभ लेने के लिए वसीयत में बताई गई शर्तों को मानना आवश्यक होता है। जब तक वसीयत करने वाला जीवित है, वह जिसे चाहे दे, अपनी सम्पत्ति का जैसे चाहे इस्तेमाल कर सकता है।

जहां तक परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया वचन बताता है, पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अधरंगी (मत्ती 9:2-6), व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री (यूहन्ना 8:3-11) और क्रूस पर मरने वाले डाकू के मामलों में केवल कुछ ही बार पाप क्षमा करने के अपने अधिकार का इस्तेमाल किया। यह सब यीशु के अपनी ''अन्तिम वसीयत और वाचा'' के प्रभावी होने से पहले दी गई आत्मिक सम्पत्तियों के उदाहरण हैं; इनमें से किसी का भी इस्तेमाल आज गैर मसीहियों के उद्धार का आधार बनाने की कोशिश के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

### उसका उद्धार मसीह द्वारा ग्रेट कमीशन देने से पहले हुआ था

अपनी निजी सेवकाई के दौरान, यीशु ने उद्धार की शर्तों की बात बताई थी। उदाहरण के लिए, उसने नये जन्म (यूहन्ना 3:3, 5) और मन परिवर्तन की आवश्यकता (मत्ती 18:3) की बात की थी। उसने विश्वास की आवश्यकता (यूहन्ना 8:24), मन फिराव की

आवश्यकता (लूका 13:3) और अंगीकार के महत्व (मत्ती 10:32) पर ज़ोर दिया था। तौ भी अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान से पहले उसने अपना ग्रेट कमीशन नहीं दिया था। इसमें उद्धार की उसकी शर्तें बताई गई थीं, कि लोगों को परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए क्या करना आवश्यक है।

> इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: ... (मत्ती 28:19, 20)।
>
> जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:16)।
>
> और उन से कहा, यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा (लूका 24:46, 47)।

कानून में एक नियम है कि कोई कानून पीछे की तारीख से प्रभावी नहीं हो सकता। यह प्रावधान अमेरिका के संविधान के अनुच्छेद 1, भाग 9 में दिया गया है: ''No ... ex post facto Law shall be passed.''[3] उस प्रावधान की एक प्रासंगिकता यह है कि यदि कोई वैधानिक संगठन आज किसी कानून को पारित करता है, तो उससे पहले की तिथि में उस नियम की शर्तों का उल्लंघन करने के लिए किसी पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। इसी प्रकार, क्योंकि वह प्रसिद्ध डाकू ग्रेट कमीशन दिए जाने से पहले मरा था, इसलिए ये शर्तें उस पर लागू नहीं हुईं। तौ भी, हम पर वे लागू *होती हैं*। डाकू को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी, पर हमें है। फिर, क्यों लोग इस बात के प्रमाण के लिए उसके बचाए जाने का उदाहरण देते हैं कि आज बपतिस्मा अनिवार्य नहीं है?

शायद इस उदाहरण से सहायता मिल जाए: यदि आयकर देने की तिथि निकल जाए और आपको कर देने के लिए कहा जाए? कर अधिकारी आप को बताए, ''आपको अपना कर चुकाना चाहिए। अच्छे नागरिक अपना कर समय पर चुका देते हैं।'' आप उत्तर दें, ''पर क्या जॉर्ज वाशिंगटन कर देता था? वह कर नहीं देता था, पर फिर भी अच्छा नागरिक था। क्या अब्राहम लिंकन कर देता था? वह कर नहीं देता था, और लोग उसे अच्छा नागरिक कहते थे। यदि ये दो महान लोग बिना कर दिए अच्छे नागरिक हो सकते हैं, तो मैं क्यों नहीं!'' क्या आपको लगता है कि कर अधिकारी आपकी बात से प्रभावित होगा? क्या आपको लगता है कि वह कहेगा, ''मैंने कभी ध्यान नहीं दिया! निश्चय ही आपको भी कर देने की आवश्यकता नहीं है''? अधिकारी ध्यान दिला सकता है कि सोलहवां संशोधन, जिसमें आयकर का प्रावधान दिया गया है, 1913 में इसकी पुष्टि कर दी गई है। इसलिए यह उस समय से पहले रहने वालों, जिसमें श्री वाशिंगटन और श्री लिंकन शामिल हैं, पर लागू

नहीं होता, परन्तु हम पर लागू होता है। हम बपतिस्मा न लेने के बहाने के रूप में उस डाकू की ओर इशारा नहीं कर सकते, क्योंकि उसका उद्धार यीशु द्वारा ग्रेट कमीशन की शर्तें देने से *पहले* हुआ था।

## उसका उद्धार सुसमाचार सुनाए जाने से पहले हुआ था

पौलुस के अनुसार, सुसमाचार (''शुभ समाचार'') के सार में यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना तीन मुख्य घटनाएं हैं। कुरिन्थियों के नाम पत्र में उसने लिखा,

> हे भाइयो, मैं तुम्हें वही *सुसमाचार* बताता हूं जो पहिले सुना जा चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था, स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ।
>
> इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु *मसीह हमारे पापों के लिए मर गया।* और *गाड़ा गया;* और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन *जी भी उठा* (1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

डाकू को स्वर्गलोक की प्रतिज्ञा दिए जाने के समय यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने की प्रक्रिया चल रही थी, पर अभी वह मरा नहीं था यानी उसका गाड़ा जाना और जी उठना भविष्य में होना था। सुसमाचार ''वास्तव में'' प्रभु के मुर्दों में से जी उठने के बाद ही सुनाया जाना था। भरपूरी से पहली बार इसका प्रचार मसीह के स्वर्गारोहण के दस दिन बाद, पिन्तेकुस्त के दिन पतरस द्वारा किया गया था (प्रेरितों 2:23, 24, 32, 36)।

आज यह अद्‌भुत सुसमाचार उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16)। इसके बिना हमारा उद्धार नहीं हो सकता है। इसके विपरीत, डाकू की मृत्यु इस सुसमाचार के लोगों में सुनाए जाने से बहुत पहले हो गई थी। वह सुसमाचार की पूरी कहानी सुनने से बहुत पहले पृथ्वी पर रहता था और मर गया। इसलिए उसका उद्धार आज गैर मसीही लोगों के लिए नमूना नहीं हो सकता, जिन्हें उस सुसमाचार को सुनकर उसकी आज्ञा मानना आवश्यक है (1 पतरस 4:17; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8)।

## सारांश

बहुत से लोग उस डाकू की तरह उद्धार पाना चाहते हैं। कुछ कहते हैं, ''वह डाकू चालाक था! उसने अपनी मनमर्जी से जीवन बिताया, बल्कि दूसरे लोगों का लाभ भी उठाया, परन्तु फिर, मरने से थोड़ा पहले मन फिराया और प्रभु ने उसे बचा लिया। मैं भी उसी की तरह बचाया जाना चाहता हूं!'' बाइबल सच्चाई को जानने के बाद आज्ञा मानना टालने की शिक्षा नहीं देती या इसे प्रोत्साहित नहीं करती। पौलुस ने लिखा है, ''देखो, *अभी* वह प्रसन्नता का समय है, देखो; *अभी* वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिन्थियों 6:2ख)।

यदि कोई टालता है कि मृत्यु के निकट आने पर मन फिरा लेगा, तो इनमें से कोई भी बात हो सकती है। पहले तो हो सकता है कि उसे अवसर मिलने से पहले ही प्रभु लौट आए। दूसरा, हो सकता है कि उस व्यक्ति की मृत्यु अचानक हो जाए। तीसरा, यदि प्रभु न भी आए और उसकी मृत्यु अचानक न भी हो, तो हो सकता है कि उस व्यक्ति का मन इतना कठोर हो जाए कि उसे मन फिराना असम्भव लगे (देखें इब्रानियों 6:6)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों से आग्रह किया था, ''यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो'' (4:7ख)। यह पता चलने पर कि प्रभु आपसे क्या करवाना चाहता है, उसे कभी न टालें।

आइए अपनी आंखें उस क्रूस से, जहां वह डाकू मरा था, हटाकर बीच वाले क्रूस पर लगाएं, जिस पर उद्धारकर्त्ता हमारे लिए मरा। यदि हम सचमुच उससे प्रेम रखते हैं, तो हम वही करेंगे जो उसने हमें करने के लिए कहा (यूहन्ना 14:15)। हम उसकी आज्ञा मानना टालने के लिए नये-नये बहानों का आविष्कार नहीं करेंगे, बल्कि प्रेम और कृतज्ञता से भरे मन से हम अपने आप को उसके आगे सौंप देंगे।

---

टिप्पणियां

[1]यदि ऐसा था, तो डाकू ने यूहन्ना या यीशु को सिखाते सुना होगा। इससे यीशु के राज्य के बारे में डाकू के शब्द समझाने में सहायता मिलेगी। [2]*ग्रोलियर मल्टीमीडिया इन्साइक्लोपीडिया,* 1999 संस्करण S.V. ''कांस्टिच्यूशन ऑफ़ न यूनाइटेड स्टेट।''